## श्लोक नं॰ 13

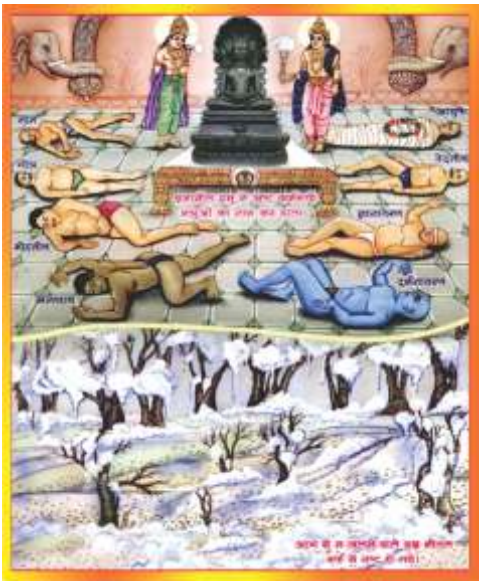

### क्षमा से क्रोध शत्रु नाश

क्रोधस्त्वया यदि विभो! प्रथमं निरस्तो-
ध्वस्तास्तदा वद कथं किल कर्मचौराः।
प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिरापि लोके
नील-द्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी॥ 13॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज - कहाँ गए चक्री...)

नवमें गुणस्थान में प्रभु ने क्रोध विनाश किया।
चौदहवें तक कर्म रिपु को कैसे नाश किया॥
अचरज है बिन क्रोध किए कैसे रिपु को जीते।
समझ गया मैं क्षमा भाव से ही अरि को जीते॥
बर्फ शीत होने पर भी वन जैसे जला रहा।
क्षमा शस्त्र से कर्मशत्रु भी वैसे नाश हुआ॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥ 13॥

(ऋद्धि)ॐ ह्रीं अर्हं णमो चोद्दसपुव्वियाणं।
चतुर्दशमहापूर्व, धरान् विद्याविशारदान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 13॥
ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्दशपूर्वधरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

### सखी छन्द

1. क्रोधित रहते जो प्राणी, वे रहते नित अज्ञानी।
मैं क्रोध भाव को छोड़ूँ, निज आतम को सम्बोधूँ॥ 673॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्रो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. क्रोधस्वरूप ना मेरा, इससे बढ़ता भव फेरा।
अब अन्तर्शोध जगाऊँ, जिनराज शरण तव आऊँ॥ 674॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धस्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. भव्यत्व भाव हितकारी, होता मुक्ती अधिकारी।
नहीं जग के सुख मैं चाहूँ, प्रभु शाश्वत सुख ही मांगूँ॥ 675॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. यानादिक से सुर आए, मणि रत्न चढ़ाने लाए।
परिवार सहित सब पूजें, प्रभु के जयकारे गूँजे॥ 676॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. यश की ध्वज सदा फहरती, सब धरा प्रभु गुण गाती।
पुलकित हो प्रकृति सारी, जय पार्श्वनाथ उपकारी॥ 677॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. दिग्-दिगन्त फैली कीर्ति, प्रभु में है ज्ञान सु-ज्योति।
मेरा अज्ञान मिटा दो, प्रभु ज्ञान सु-दीप जला दो॥ 678॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. विपरीत डगर ना चलना, प्रभु-पथ पर ही नित चलना।
आएँ कितनी बाधाएँ, सह लूँगा सब विपदाएँ॥ 679॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. भो चेतन! अब तो जागो, सब वैर भाव को त्यागो।
साधर्मी से प्रिय बोलो, वचनों में मिश्री घोलो॥ 680॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. प्रक्षालित कर स्वातम को, ध्याऊँ नित परमातम को।
प्रभु-भक्ति ध्यान सुखदायी, हैं विषय भोग दुखदायी॥ 681॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. थर-थर तब पाप कँपे हैं, जब प्रभु का नाम जपे हैं।
प्रभु महा पराक्रम धारी, हैं सर्व जगत उपकारी॥ 682॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. मंदिर-मंदिर में मूरत, श्री पार्श्वप्रभु की सूरत।
लख मूरत साहस जागे, कायरता मन से भागे॥ 683॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. निर्मूल मोह क्षय करके, प्रभु स्वात्म लोक में रमते।
मैं मोह शत्रु से हारा, भव भटका मारा-मारा॥ 684॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. रहना है एक अकेले, दुखदायी सर्व झमेले।
निज से निज में रम जाऊँ, कब ऐसा अवसर पाऊँ॥ 685॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. प्रस्तोता प्रभु तत्त्वों के, जीवादिक छह द्रव्यों के।
शुद्धात्म तत्त्व मैं जानूँ, स्वातम को मैं पहचानूँ॥ 686॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. ध्वनि दिव्य आपकी प्यारी, संशय हरणी सुखकारी।
जो पिये वचन का प्याला, खुल जाए मोक्ष का ताला॥ 687॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. रस्ता शिवपुर का लम्बा, जहाँ पहुँचे आप जिनन्दा।
मैं भी तव पद-चिह्नों पर, आ जाऊँ निरख-निरख कर॥ 688॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. स्तव को लिखते पढ़ते हैं, दुष्कर्म सभी टलते हैं।
मैं करूँ स्तवन जिनराया, तव सिद्धालय मन भाया॥ 689॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. दावानल धधक रहा है, रागादिक अनल महा है।
समता का जल प्रकटाओ, जलती यह आग बुझाओ॥ 690॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. वन्दूँ जिन पार्श्व जिनेश्वर, सब जग के प्रिय परमेश्वर।
प्रभुवर को सब जन जाने, आबाल वृद्ध पहचाने॥ 691॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. दर्शन को नयन तरसते, प्रभु आप कहीं ना दिखते।
बालक सम भक्त बुलाता, ना देर करो जिनमाता॥ 692॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. करुणा के सागर नामी, मम पीर मिटाओ स्वामी।
मैं जनम-जनम का दुखिया, नित रोती हैं मम अँखियाँ॥ 693॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. थम्बे चउ आराधन के, प्रभु राजा सिद्ध-भवन के।
मुझको शिवमहल बुला लो, है भक्त खरा अपना लो॥ 694॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. किस्मत उनकी जागी है, रुचि स्वातम की लागी है।
धन से न बड़ा हो जाता, जिनधर्मी श्रेष्ठ कहाता॥ 695॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. लज्जित हूँ मैं जिनरायी, धर पर्यायें दुखदायी।
होकर मैं सिद्धप्रभु सम, क्यों भटक रहा हूँ भव-वन॥ 696॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. कर्त्तव्य करो हे चेतन, कर्त्तापन दुख का कारण।
है जीव स्वयं का कर्त्ता, पर का कर्त्ता ना हर्त्ता॥ 697॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. मन प्रभु गुण में जब लगता, जिनसम निज आतम लगता।
प्रभु राग रहित मैं रागी, बनने आया वैरागी॥ 698॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. चौदिश में मुख दिखते हैं, सब श्रोता सुख पाते हैं।
सबको दिखते जिनरायी, जय पार्श्वप्रभु अतिशायी॥ 699॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चौ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. निर्जराः सहेली शिव की, है बन्ध कथा भव दुख की।
बन्धास्रव को कब छोड़ूँ, संवर निर्जर को जोड़ूँ॥ 700॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'राः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. प्लोषत्यात्मानं[1] क्रोधं, है बोध शान्ति का कारण।
प्रभु ने समता को धारा, अति क्रूर कमठ को तारा॥ 701॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्लो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. षट्खण्डाधिपति[2] आता, प्रभु पार्श्व पदों में नमता।
नवनिधि रत्नों को तजकर, वह नरेन्द्र बनता मुनिवर॥ 702॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ष' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. सत्यादि धर्म के धारी, प्रभु सर्व जगत हितकारी।
ना कोई शत्रु तिहारा, वन्दन शत बार हमारा॥ 703॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. मुक्तिदारा परिणाकर, श्री पार्श्वप्रभु वर बनकर।
सिद्धालय राज करे हैं, सुख अव्याबाध लहे हैं॥ 704॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. प्लोषति = जला देता है। 2. चक्रवर्ती

33. त्रय रोग लगे हैं भारी, औषध दो प्रभु उपकारी।
हो परम वैद्य विभु मेरे, फिर भव-व्याधि क्यों घेरे॥ 705॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. यशगान प्रभु का गाकर, सातिशय पुण्य कमाकर।
शाश्वत शिवदेश पहुँचते, निज शुद्धातम में रमते॥ 706॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. दिवि से भूपर प्रभु आए, करुणावतार बन आए।
शान्ति का बिगुल बजाया, सोए थे उन्हें जगाया॥ 707॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. वारिधि में रत्न छिपे हैं, प्रभु में गुण रत्न दिपे हैं।
अपने सब दोष मिटाऊँ, निज अनन्त गुण प्रकटाऊँ॥ 708॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. शिशु जिनवर तुम्हें पुकारे, पहुँचा दो मुझे किनारे।
तुम बिन ना कोई सहायी, आओ पारस जिनरायी॥ 709॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. शिवपुर में बसने वाले, शिवपथ दर्शाने वाले।
दिन-रात करूँ मैं सुमरन, पारस प्रभु का आराधन॥ 710॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. राजर्षि प्रभु-पद आते, ब्रह्मर्षि शीश नवाते।
मैं करूँ आपका वन्दन, मेंटूँ भव-भव का क्रन्दन॥ 711॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. पितु अश्वसेन के नन्दन, तुमको तन मन सब अर्पण।
निज में शीतलता पाऊँ, अतएव शरण में आऊँ॥ 712॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. लोचन से प्रभु ना दिखते, मुनि अन्तर्मन में लखते।
अन्तर्चक्षु खुल जाए, हम यही भावना भाए॥ 713॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. केशर चन्दन की वर्षा, सुर करते हर्षा-हर्षा।
केशरिया ही केशरिया, जहाँ बैठे प्रभु साँवलिया॥ 714॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'के' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. नीरज खिलते सरवर में, भवि मन खिलते जिनपद में।
मम हृदयकमल विकसाओ, हे पार्श्वप्रभु आ जाओ॥ 715॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. लवलीन आप अपने में, फिर भी दिखते सपने में।
प्रत्यक्ष दर्श अब देना, नयनों की प्यास बुझाना॥ 716॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. द्रुतगति से एक समय में, प्रभु पहुँचे सिद्धालय में।
मुझको भी चरण-शरण दो, नाशो मम जगत भ्रमण को॥ 717॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्रु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. मालाएँ अनेक फेरी, पर भाव शुद्धि ना मेरी।
अतएव शरण में आया, समकित पाकर सुख पाया॥ 718॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. णिक्कम्मा कर्म रहित हैं, प्रभु अनन्त गुण संयुत हैं।
भक्तों के मन में बसिए, सारे संकट को हरिए॥ 719॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. विपरीत मार्ग ना चलना, प्रभु पथ पर ही आचरना।
बस लक्ष्य यही है मेरा, तोड़ूँ कर्मों का घेरा॥ 720॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. पिण्डस्थ ध्यान में ध्याते, ऋषि मुनिजन कर्म जलाते।
उपयोग सुथिर मम करना, उसमें प्रभु आकर बसना॥ 721॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. नादान न कुछ मैं जानूँ, प्रभु महिमा ना पहचानूँ।
मैं अल्पमति हूँ स्वामी, प्रभु पूर्णमति जगनामी॥ 722॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. निष्कर्म हुए जिनराया, हो निर्विकार शिव पाया।
ना श्रेष्ठ जगत में तुम-सा, मैं नमूँ वचन तन मनसा॥ 723॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. नभ में विहार प्रभु करते, सुरगण तव जय-जय करते।
हो गए पार्श्व शिवधामी, वन्दन अगणित जगनामी॥ 724॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. किंकर मालिक बन जाता, जब पुण्य उदय में आता।
मम पुण्य उदय कब आए, यह भक्त शरण तव पाए॥ 725॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'किं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. हिमगिरि-सा उन्नत जीवन, प्रभु की वाणी संजीवन।
अनगिन को जीवन देती, मुक्ती का पथ दर्शाती॥ 726॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. मात्सर्य कभी ना करना, गुण ग्रहण भाव नित रखना।
यह जैनागम का कहना, दुर्जन का संग न करना॥ 727॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. नीलम पन्ना ला करके, प्रभु-पद में अर्पण करके।
नरपति भी शीश नवाते, नर जीवन सफल बनाते॥ 728॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

## पूर्णार्घ्य

बिन क्रोध शत्रु क्षय करते, जैसे हिम से वन जलते।
पद अर्घ्य धरूँ भर थाली, निर्दोष पार्श्व जिनरायी॥ 13॥

ॐ ह्रीं श्रीं जितक्रोधाय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

## श्लोक नं॰ 14

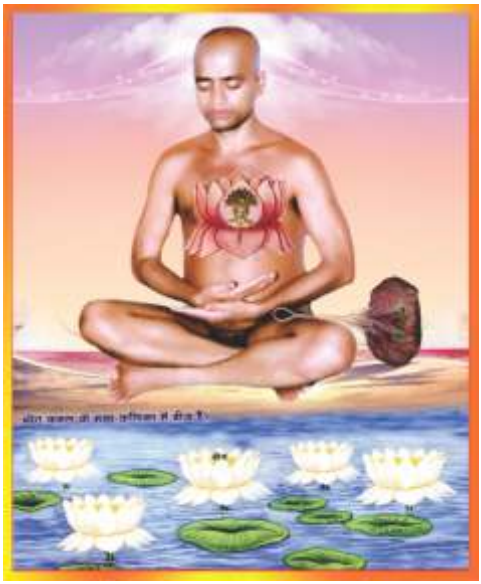

### हृदय कमल में प्रभु निवास

त्वां योगिनो जिन सदा परमात्मरूप-
मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुज - कोशदेशे।
पूतस्य निर्मल रुचे र्यदि वा किमन्य-
दक्षस्य संभवपदं ननु कर्णिकायाः ॥ 14 ॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज - कहाँ गए चक्री...)

अविनाशी पद पाने को जब ध्यान लगाते हैं।
योगीश्वर तब हृदय स्थान में तुम्हें खोजते हैं॥
कमल बीज की उत्पत्ति ज्यों कमल कर्णिका में।
परमातम की प्राप्ति हो निज हृदय वेदिका में॥
धन्य मुनि एकाग्रमना हो शुद्धातम ध्याते।
हृदय कमल में तुमको पाकर शिवपद पा जाते॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥ 14 ॥

(ऋद्धि)ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं।

**अष्टमहानिमित्तांग, कुशलान् सन्मुनीश्वरान्।**
**यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 14॥**

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टांगमहानिमित्तकुशलेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

दोहा

1. **त्वां स्तोतुं तैयार हूँ, यदपि अल्पमति नाथ।**
**अरज यही है आपसे, देना पल-पल साथ॥ 729॥**

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्वां' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **योगी होकर आपने, किया मोह का नाश।**
**कर्मोदय में भी विभो, समता रखते पास॥ 730॥**

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **गिरिवर ऊँचा है बहुत, बहुत थके हैं पाँव।**
**किन्तु लगन है दर्श की, पाऊँ शिखर की छाँव॥ 731॥**

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **नो-इन्द्रिय को जीतकर, मन जेता जिनराय।**
**जित इन्द्रिय प्रभु जितमना, नमूँ अनन्तों बार॥ 732॥**

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **जिनेन्द्र पारसनाथ जी, सर्व प्रियङ्कर आप।**
**पूजन करके आपकी, हुए भक्त निष्पाप॥ 733॥**

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **नयनोत्सव कब हो प्रभो, निरखूँ मूरत शान्त।**
**भूले भटके भक्त को, पाना है शिव प्रान्त॥ 734॥**

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **सकल विश्व को जानते, पूर्णज्ञान से व्याप्त।**
**निजाधीन सुख के धनी, वीतराग प्रभु आप्त॥ 735॥**

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. दाता जग में श्रेष्ठ जिन, दिया तत्त्व का ज्ञान।
क्षायिक नव लब्धि महा, रत्नों से धनवान॥ 736॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. परोपकारी वृत्ति लख, झुक जाता मम शीश।
भव्यों के कल्मष हरें, तीन भुवन के ईश॥ 737॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. रत्नत्रय के तेज से, प्रकटा आत्म-प्रकाश।
प्राप्त कर लिया आपने, चिन्मय ज्ञानाकाश॥ 738॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. अकस्मात् कुछ हो नहीं, होय कर्म अनुसार।
अत: सँभल कर कर्म कर, यही जिनागम सार॥ 739॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मात्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. आत्मन् कहकर आपने, मुझे पुकारा नाथ।
अहो भाग्य मेरा यही, प्रभु आप हैं पास॥ 740॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. स्वरूप निज का जानकर, हुए उसी में लीन।
शूरवीर प्रभु ने किया, सर्व कर्म को क्षीण॥ 741॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. पथिक चल रहा अनवरत, कहाँ विराजे नाथ।
कदम-कदम प्रभु ढूँढ़ता, दर्शन की ही प्यास॥ 742॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. मन्मथ का क्षय कर प्रभो, बने आप शीलेश।
शुद्धातम में रमण कर, कहलाते सर्वेश॥ 743॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. वेदन सुख-दुख का किया, नन्त भवों से नाथ।
निजानन्द अनुभव करूँ, यही प्रार्थना आज॥ 744॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. षड्यन्त्रों को विफल कर, किया कर्मरिपु नाश।
सिद्धदशा को प्राप्त कर, किया मुक्तीपुर वास॥ 745॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ष' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. यन्त्र-तन्त्र का काम ना, मन है यदि पवित्र।
जग में महान मन्त्र सम, श्रेष्ठ न कोई मित्र॥ 746॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. तिष्ठ-तिष्ठ उर वेदि पर, करूँ स्थापना नाथ।
परमारथ सुख हित नमूँ, शिवपुर तक दो साथ॥ 747॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. हृदयासन पर आइए, पुकारता यह भक्त।
कष्ट भोगता पाप से, करिए भव से मुक्त॥ 748॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. दशा देख मेरी प्रभो, करिए कृपा जरूर।
जिन सम निज की हो दशा, विनती हो मंजूर॥ 749॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. सौम्यां जिन-छवि देखकर, सुमरूँ मैं जिनराज।
देव बहुत से जगत में, नहीं आपसा नाथ॥ 750॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'याम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. बुद्ध वीर हरिहर कहूँ, या पारस मुनिनाथ।
नाम अनेकों आपके, ध्याऊँ मैं जिनराज॥ 751॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. जगत जाल में फँस गया, मुझे बचा लो नाथ।
जब तक आए काल ना, जिनवर देना साथ॥ 752॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. कोटि रवि सम तेज है, प्रभु के तन का दिव्य।
अपलक रहूँ निहारता, छवि लगती अति रम्य॥ 753॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'को' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. शक्तिहीन यह भक्त है, कर्म बड़े बलवान।
शरण आपकी प्राप्त कर, बनूँ स्वयं गुणखान॥ 754॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. देव पूजते आपको, मनुजों की क्या बात।
गणधर ऋषि भी झुक रहे, मैं भी हूँ नत माथ॥ 755॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. शेर हिरण आदिक पशु, समवसरण में आय।
दिव्यध्वनि सुन आपकी, मुक्ति का पथ पाय॥ 756॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. पूर्णज्ञान धारी प्रभो, सर्व कार्य हैं पूर्ण।
द्रव्य भाव नोकर्म को, किया आपने दूर॥ 757॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. तर्क-वितर्कों से परे, नाथ आप सर्वज्ञ।
निश्चय नय से आप हैं, पार्श्वप्रभु आत्मज्ञ॥ 758॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. हास्य आदि नोकर्म भी, किए आपने चूर्ण।
निष्कषाय धारी दशा, अनन्त सुख भरपूर॥ 759॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. निर्धारित कर लक्ष्य को, चले मोक्ष के पन्थ।
अथक अरुक चलकर हुए, परम सिद्ध भगवन्त॥ 760॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'निर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. महा पुण्य के उदय से, मिला प्रभु संयोग।
जब तक मुक्ती ना मिले, पाऊँ तव पद योग॥ 761॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. लगन लगी ध्रुवधाम की,कब हो विधि का अन्त।
जग से परिचय छोड़ दूँ, बन जाऊँ शिवकन्त॥ 762॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. रुग्ण चेतना राग से, द्वेष आग से तप्त।
वीतराग मय हो दशा, होऊँ निज में तृप्त॥ 763॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. शुचेर्मन से पूजते, त्रियोग से जो भव्य।
पूज्य जनों से पूज्य हो, त्रिभुवन से हो वन्द्य॥ 764॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चेर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. यथाजात धर रूप को, परणी सिद्धि नार।
ऐसे पारसनाथ को, वन्दन करूँ हजार॥ 765॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. दिनकर में कुछ दोष है, जिन दिनकर निर्दोष।
अत: करो जिनदर्श नित, भर लो निजगुण कोष॥ 766॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. वार किया निज ध्यान से, कर्मरिपु पर तेज।
आप हुए विजयी प्रभो, शत्रु हुआ निस्तेज॥ 767॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. कितने भव-भव भटक कर, आया हूँ तव द्वार।
शान्ति मिली तव चरण में, करिए मम उद्धार॥ 768॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. मन्द कषायें हो तभी, रुचिकर लगे विधान।
मात्र क्रिया तुम ना करो, कहें पार्श्व भगवान॥ 769॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. यहाँ पराये सर्व जन, अपने से प्रभु आप।
अतः सुनाने आ गया, व्यथा कथा जिनराज॥ 770॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. दक्ष आप निज कार्य में, किए पूर्ण सब काज।
हुए आप कृतकृत्य जिन, पाया शिव साम्राज्य॥ 771॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. क्षमादि गुण को धार कर, जीत लिए रिपु सर्व।
हुए आप भगवान जब, वही काल शुभ पर्व॥ 772॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्ष' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. उपास्य हो हम भक्त के, पार्श्वनाथ भगवान।
उपासना करता रहूँ, हे जिनवर गुणखान॥ 773॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. संवर निर्जर तत्त्व का, आदर करते भक्त।
मोक्ष तत्त्व का लक्ष्य कर, हो जाते हैं मुक्त॥ 774॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. भक्ति से मुक्ति मिले, कहते हैं गुरुदेव।
अतः करो सद्भक्ति ही, मिले मुक्ति स्वयमेव॥ 775॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. वक्र भाव से ना मिले, सिद्धिवधू का दर्श।
सहज सरलता से करे, निज शुद्धातम स्पर्श॥ 776॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. परिक्रमा प्रभु की करूँ,हो भव भ्रमण विनाश।
अरज यही पाऊँ प्रभो, चिन्मय शुद्धाकाश॥ 777॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. दम्भी छलिया जीव पर, होय नहीं विश्वास।
अतः करो पाखण्ड ना, कहते हैं जिनराज॥ 778॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. नन्हा-सा बालक यहाँ, खड़ा प्रभु तव द्वार।
व्यथा सुनाने आ गया, सुनो सौख्य करतार॥ 779॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. नुत-नुत करूँ प्रणाम नित,द्वय चरणों में नाथ।
मुझ अनाथ को कीजिए, देकर साथ सनाथ॥ 780॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. कर्म अष्ट अरिगण मुझे, डरा रहे जिनराज।
शरण पड़ा हूँ आपकी, रक्षा करिए नाथ॥ 781॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. मणिमुक्ता को चरण में, चढ़ा रहे नर-नार।
अरज करें सब भक्तगण, दिखला दो शिवद्वार॥ 782॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. कार्य आपने जो किया, कर पाऊँ मैं नाथ।
मोक्ष-महल तक जा सकूँ, शक्ति दो जिनराज॥ 783॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'का' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. मिथ्या: भ्रम सब छोड़कर,शरण आ गया नाथ।
डूब रही मम नाव के, तुम ही खेवनहार॥ 784॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'या:' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

## पूर्णार्घ्य

कमल बीज उत्पत्ति का, कमल कर्णिका स्थान।
उर में प्रभु को खोजते, सन्त लगाते ध्यान॥
हृदय कमल में प्रभु बसे, सविनय शीश नवाय।
चरणों में पूर्णार्घ्य धर, प्रभुवर के गुण गाय॥14॥

ॐ ह्रीं श्रीं महन्मृग्याय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

## श्लोक नं॰ 15

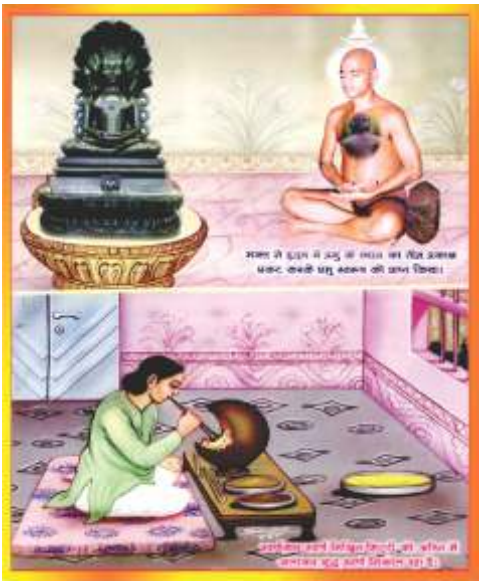

### ध्यान से परमात्म पद की प्राप्ति

ध्यानाज्जिनेश भवतो भविनःक्षणेन
देहं विहाय परमात्म-दशां व्रजन्ति।
तीव्रानलादुपल-भावमपास्य लोके
चामीकरत्वमचिरादिव धातुभेदाः ॥ 15 ॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज - कहाँ गए चक्री...)

अग्नि का संयोग प्राप्त कर शुद्ध स्वर्ण बनता।
स्वर्ण उपल वह किट्ट कालिमा निश्चित ही तजता॥
प्रभु ध्यान से भक्त आत्मा देह छोड़ देता।
पलभर में परमात्म दशा को निश्चित पा लेता॥
ध्यान अनल प्रकटाकर वसु विध कर्म नशाये हैं।
ज्ञान शरीरी भगवन् मेरे हृदय समाये हैं॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥ 15॥

(ऋद्धि)ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वणइड्ढिपत्ताणं।

**विक्रियर्द्धिपरिप्राप्तान्, संयतान् नाकिपूजितान्।**
**यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥15॥**

ॐ ह्रीं अर्हं विक्रियर्द्धिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

### अर्द्ध ज्ञानोदय छन्द

1. **ध्या**न करे जो लगन लगाकर, ध्येय तत्त्व को पाते हैं।
**सिद्धमहल तक जाने वाले, लौट कभी ना आते हैं॥ 785॥**
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध्या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **ना**द घन्ट के वैमानिक में, प्रभु के जन्म समय पर हो।
**चउ निकाय देवों में उस दिन, तरह-तरह के उत्सव हों॥ 786॥**
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **श्रीमज्जि**नेन्द्र पारस स्वामी, क्षमा सिन्धु कहलाते हैं।
**दस भव तक की क्षमा प्रभु ने, विजय कमठ पर पाते हैं॥ 787॥**
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज्जि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **ने**त्र करे विस्फारित सुरपति, प्रभु को इकटक निरख रहा।
**तीर्थङ्कर का रूप सलोना, लखकर हिय में हरख रहा॥ 788॥**
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ने' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **श**ठ कमठासुर नाथ आपकी,शक्ति को ना जान सका।
**घोर-घोर उपसर्ग किए पर, अंतिम में वह स्वयं थका॥ 789॥**
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **भ**वअटवी में भटक-भटक कर, मिला ठिकाना कहीं नहीं।
**वीतराग प्रभुवर को पाकर, मिला मुझे सर्वस्व यहीं॥ 790॥**
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **व**र्तमान के तीर्थङ्कर प्रभु, दिव्य द्रव्य से पूजित हैं।
**पार्श्वनाथ जी ऊर्ध्व मध्य औ, अधोलोक से वन्दित हैं॥791॥**
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8 तोड़ जगत के सारे बन्धन, निज से नाता जोड़ लिया।
जो उपयोग भटकता पर में, उसे स्वयं में जोड़ दिया॥ 792॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. भवतरणी प्रभु कला जानते, अनेक भव्य तिराये हैं।
सुनकर नाथ प्रसिद्धि हम भी, द्वार आपके आये हैं॥ 793॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. विधान करते-करते भगवन्, आप आप ही दिखते हो।
पल-पल सार्थक लगता मुझको, क्योंकि हृदय मम बसते हो॥794॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. पुनः-पुनः दर्शन मैं चाहूँ, हर पल नयन तुम्हें निरखे।
इक पल भी प्रभु ओझल ना हो, देख-देख प्रभु मन हरषे॥ 795॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. क्षणभङ्गुर जग के पदार्थ सब, पाकर भी कुछ मिला नहीं।
जब देखी प्रभु वीतराग छवि, मुरझाया मन खिला यहीं॥ 796॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्ष' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. क्षणेन भी जो भक्ति कर ले, पाप कर्म क्षय हो जाते।
उपादान निज सुदृढ़ करके, विजय कर्म पर वे पाते॥ 797॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. नया वर्ष लगता जब प्रभु का, दर्शन अन्तर में होता।
जनम-जनम के पाप कर्म को, कुछ ही पल में है धोता॥ 798॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. देहालय में आत्म प्रभु हैं, देवालय में पार्श्वप्रभो।
जिनप्रभु से निजप्रभु को पाने, वन्दन हो स्वीकार विभो॥ 799॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. सोऽहं-सोऽहं ध्यान लगाकर, अपार शान्ति मिलती है।
वैकारिक भावों से मुझको, उस पल मुक्ती लगती है॥ 800॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. विनयवान ही मोक्षमहल में, प्रवेश करने सक्षम है।
सरल नम्र जीवों का निशदिन, होता सुख संवर्धन है॥ 801॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. हाहाकार मचा इस जग में, पापी दुख से व्याकुल हैं।
श्रद्धा रखता जो जिनवर पर, वे ही सुखी निराकुल हैं॥ 802॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. यथार्थ सुख निज आतम में है, पर की आशा व्यर्थ अरे।
दृष्टि निज में मोड़ जरा तू, क्यों ना अब परमार्थ वरें॥ 803॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. पथिक बना मैं चउ गतियों का,कदम-कदम पर दुख पाता।
मिले आप पथदर्शक जबसे, पाई है मैंने साता॥ 804॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. रग-रग में जिन श्रद्धा भर लूँ, श्वास-श्वास प्रभु नाम रटूँ।
चाहे कितनी हो बाधाएँ, कभी न भगवन् दर्श तजूँ॥ 805॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. परमात्मा होना यह मेरा, शुद्ध सिद्ध अधिकार रहा।
फिर भी अपनी सुध-बुध खोकर, क्यों 'पर' को स्वीकार रहा॥ 806॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मात्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. मलयाचल चन्दन की खुशबू,जिनगुण आगे फीकी है।
प्रभु की वाणी सुनकर मेरी, शुष्क चेतना भीगी है॥ 807॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. दर्पण पूर्णज्ञान जिनवर का, लोकालोक दिखाता है।
राग-द्वेष से रहित आपका, जीवन सबको भाता है॥ 808॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. शांत स्वरूपी मूरत लखकर, कुछ ना लखना शेष रहा।
धन्य हुए द्वय नयन हमारे, जीवन सारा धन्य अहा॥ 809॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शां' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. व्रती बने बिन भवदधि का तट, नहीं किसी को मिल सकता।
मुनी बने बिन कोई साधक, सिद्ध कभी ना बन सकता॥ 810॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. जन्मजात संस्कारित थे प्रभु, पूर्व जन्म के कारण ही।
सोलहकारण भाय भावना, पाई तीर्थङ्कर पदवी॥ 811॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. तिहारी शरणा पाकर कोई, कभी दुखी क्या रह सकता।
ऐसा मैं इक भक्त आपका, दुखहारक प्रभु को नमता॥ 812॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. तीरथ वन्दन बहुत किया पर, भेदज्ञान यदि नहीं हुआ।
देह क्रिया सब व्यर्थ हुई यदि, निजातमा को नहीं छुआ॥ 813॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ती' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. तीव्रानल जब कमठ चलाए,तब प्रभु निज में लीन हुए।
कमठासुर की माया विनशी, प्रभु-पद में आ शीश धरे॥ 814॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व्रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. नरभव धन्य किया प्रभु जी ने, जब सिद्धि का वरण किया।
सद् भक्तों ने नाथ आपके, चरणों का अनुसरण किया॥ 815॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. लाली प्रातः और शाम की, नहीं एक-सी होती है।
मिथ्यात्वी औ सम्यक्त्वी की, वृत्ति भिन्न ही होती है॥ 816॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ला' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. दुस्सह घोर-घोर तप करके, परीषहों को सहन किया।
फलस्वरूप आठों कर्मों का, नाथ आपने क्षरण किया॥ 817॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. पलक पावड़े बिछा-बिछाकर, भक्त प्रतीक्षा करता है।
आएँगे प्रभु हृदयांगन में, ऐसा यह मन कहता है॥ 818॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. लघु बालक की अरज यही है,निज सम मुझे बना लेना।
है अशरण असहाय भक्त अब, नाथ मुझे अपना लेना॥ 819॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. भावभासना नहीं हुई तो, क्रिया व्यर्थ हो जाती है।
आत्म-साधना अति दुर्लभ है, प्रभु वाणी यह कहती है॥ 820॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. वधिर मूक जन भी प्रभु पद में, पूर्ण स्वस्थ हो जाते हैं।
शब्दातीत प्रभु की महिमा, वर्णन ना कर पाते हैं॥ 821॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. मनोज्ञ प्रभु की छवि देखकर,पलक झपकना भूल गई।
सुध-बुध भूल गए सब तन की,निज आतम की सुध आई॥ 822॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. पार्श्व शरण में जो भी आया, पारस उनको बना दिया।
शुद्ध स्वानुभूति रस उनने, स्वात्म तत्त्व को चखा दिया॥ 823॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. हास्यास्पद है जीवन मेरा,अब तक श्रेष्ठ न कार्य किया।
मिले आप सम प्रभु जी फिर भी, क्यों ना निज कल्याण किया॥ 824॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. लोकालोक जानते फिर भी, नहीं ज्ञान का मान करें।
तुच्छ जानता अज्ञ किन्तु वह,मद करता भव भ्रमण करे॥ 825॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. केलि करते शुद्धातम में, ज्ञानाङ्गन को उजियारा।
शिवाङ्गना तब तप-मण्डप में, आकर डाले वरमाला॥ 826॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'के' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. चार शरण जग में मङ्गल हैं, ध्यान इन्हीं का करना है।
चउ गतियों से विमुक्त होकर, आत्मिक सुख में रमना है॥ 827॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. मीत आप सम और न दूजा, सर्व कष्ट को दूर करें।
अनुपम सखा तुम्हीं हो भगवन्, अनन्त सुख भरपूर करें॥ 828॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. कर्मजाल में फँसी हुई मम, जीवन नैया पार करो।
आशा है विश्वास आप पर, अरजी मम स्वीकार करो॥ 829॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. रसना प्रभु का ही गुण गाकर, धन्य स्वयं को मान रही।
परनिन्दा चुगली को तज दे, जिनवाणी का ज्ञान यही॥ 830॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. त्वरित गति से लोक अग्र तक, सिद्धालय प्रभु पहुँच गए।
देख नहीं सकते अब प्रभु को, दुखित हृदय से सोच रहे॥ 831॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. मन-वच-तन शुद्धिपूर्वक मैं, करता हूँ आह्वान प्रभो।
शुभ उपयोगी भक्त बुलाता, आओ पारसनाथ विभो॥ 832॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. चिरंजीव सच आप प्रभु जी, जन्म-मरण को जीत लिया।
सर्व दोष को क्षयकर प्रभु ने, विदेह पद को प्राप्त किया॥ 833॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. राजा और महाराजा सब, जिन चरणों में आते हैं।
बहुमूल्य वसु द्रव्य हाथ ले, श्रद्धा सहित चढ़ाते हैं॥ 834॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. दिग्भ्रमितों को दिशाबोध दे, सप्त तत्त्व का ज्ञान दिया।
मिथ्यातम को मिटा आपने, रत्नत्रय का दान दिया॥ 835॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. वक्ता प्रमुख विश्व में तुम ही,कोई न तुमसा बोल सके।
दिव्यध्वनि ओंकार स्वरूपी, मिथ्या भ्रम को तोड़ सके॥ 836॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. धाम मोक्ष का पाकर प्रभु जी, कभी न जग में आएँगे।
बना दुग्ध से घृत यदि तो फिर, पुनः दूध ना पाएँगे ॥ 837॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. तुलना योग्य नहीं हैं प्रभु जी, अनुपमेय गुण नन्त रहें।
बड़े-बड़े विद्वानों से प्रभु, आप सदा ही वन्द्य रहें॥ 838॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. भेदज्ञान के द्वारा प्रभु ने, रत्नत्रय अंगीकारा।
चउ आराधन के मण्डप में, शिवाङ्गना को स्वीकारा॥ 839॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. वरदाः पूर्ण मनोरथ करते, जो जन श्रद्धा धरते हैं।
भाव समर्पण के बल पर ही, मोक्षमहल तक बढ़ते हैं॥ 840॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दाः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

## पूर्णार्घ्य

स्वर्ण उपल अग्नि में तपकर, किट्ट कालिमा तज देता॥
प्रभु ध्यान कर भक्त आतमा, देह छोड़कर शिव पाता॥
ध्यानानल में अष्ट कर्म को, मुझको पूर्ण नशाना है।
पार्श्वप्रभु के श्री चरणों में, शुभ पूर्णार्घ्य चढ़ाना है॥ 15॥

ॐ ह्रीं श्रीं कर्मकिट्टदहनाय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

## श्लोक नं॰ 16

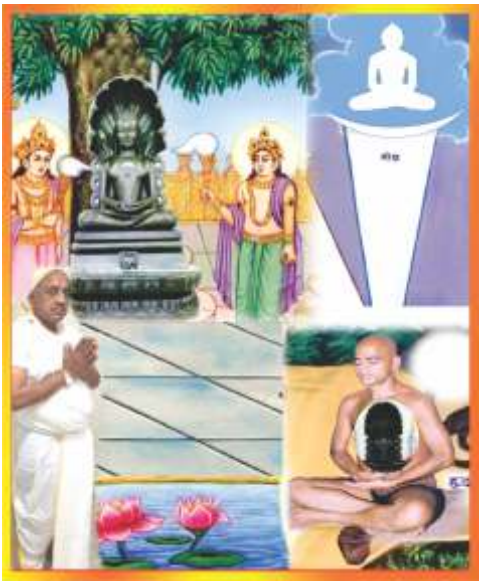

### शरीर में वास करके शरीर का नाश

अन्तः सदैव जिन यस्य विभाव्यसे त्वं
भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम्।
एतत्स्वरूपमथ मध्य-विवर्तिनो हि
यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः॥ 16॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज - कहाँ गए चक्री...)

रहें संत जिस जगह उसे कभी नाश नहीं करते।
लोक रीति यह प्रचलित पर प्रभु ऐसा ना करते॥
भव्यों के तन में रहकर फिर देह रहित करते।
द्वेषादिक को दूर भगाकर विदेह पद देते॥
सब विवाद की जड़ देहादिक द्वेष भाव ही हैं।
विभाव को जो नाश करे वह महापुरुष ही हैं॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥ 16॥

(ऋद्धि)ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं।

**विद्याधरान् प्रलब्धर्द्धीन्, विश्वतत्त्वोपदेशकान्।**
**यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥16॥**

ॐ ह्रीं अर्हं विद्याधरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

### विष्णुपद छन्द

1. **अन्य जगत में कोई न शरणा आप शरणदाता।**
**मन आह्लादित होता जब मैं आप नाम जपता॥ 841॥**

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'अन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **स्वतः दुखी अज्ञान भाव से अतः द्वार आया।**
**तारोगे भवसागर से यह आशा मैं लाया॥ 842॥**

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **सकल वाङ्मय प्रकट हुआ है जिन मुखाब्ज द्वारा।**
**नाथ आपकी दिव्यध्वनि ने भव्यों को तारा॥ 843॥**

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **दैत्यात्मा भी आप शरण पा दया धारते हैं।**
**नाथ आपकी सन्निधि पा कई जीव सुधरते हैं॥ 844॥**

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दै' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **वसुविध द्रव्य चढ़ाकर मेरा मन सुख पाता है।**
**अष्टम वसुधा पाने को यह भक्त तरसता है॥ 845॥**

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **जिन का सुमरन आगत विघ्नों को पल में टाले।**
**सद्भक्तों की डगमग करती नैया को तारे॥ 846॥**

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **नरपुङ्गव सुरपति अहिपति सबसे प्रभु पूज्य हुए।**
**नास्तिक भी आस्तिक बन जाते सबसे वन्द्य हुए॥ 847॥**

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. यथाख्यात संयम धर प्रभु ने कर्म नशाए हैं।
नाथ आपके पद-चिह्नों पर चलने आए हैं॥ 848॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. जिनस्य मैं सद् भक्त आपका मम तम हरण करो।
मोह राग दुख देता मुझको इसका क्षरण करो॥ 849॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. विशदमति सु-स्पष्ट ज्ञान के भगवन् धारक हो।
शिवसुखकारक भवि जीवों के सब दुखवारक हो॥ 850॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. भागीरथ पावन-सा जीवन नाथ आपका है।
सोया भाग्य नाथ दर्शन से तत्क्षण जगता है॥ 851॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. व्यन्तर आदिक चउ निकाय सुर प्रभु को निरख रहे।
आतम और अनात्म तत्त्व को सम्यक् परख रहे॥ 852॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. सेवक हूँ मैं एक बार प्रभु चँवर ढुराने दो।
अन्तर में यह भाव भक्त के समीप आने दो॥ 853॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'से' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. त्वम् निर्मापित जिन अणुओं से वे उतने ही थे।
अतः आप सम इस जगती पर और न कोई थे॥ 854॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्वम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. भवकानन में भटक रहा हूँ राह न सूझे नाथ।
एक बार आ हाथ थाम लो अरजी है जिनराज॥ 855॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. दिव्यैः अष्ट द्रव्य से अर्चित पार्श्वनाथ स्वामी।
पंच परावर्तन तज करके हुए मोक्षगामी॥ 856॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व्यैः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. कहाँ मिलेंगे पार्श्वप्रभु जी अब इस अवनि पर।
काल अनन्ता वहीं रहेंगे अष्टम भूमि पर॥ 857॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. स्वस्थं पार्श्वनाथ जिनदेवं वन्दन करता हूँ।
मिला मुझे सौभाग्य आज प्रभु अर्चन करता हूँ॥ 858॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. तराश कर शिल्पी पत्थर की मूरत गढ़ देता।
मैं पाषाण रूप हूँ मुझको भगवत् पद देना॥ 859॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. दरिया भरा ज्ञान का ऐसा कभी न खाली हो।
पूर्णज्ञान से पूरित प्रभु जी मेरे स्वामी हो॥ 860॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. पिशाच दौड़ाएँ सुर ने जब आप ध्यान में थे।
तव आगे फिर कमठासुर ने घुटने टेके थे॥ 861॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. नायक हो त्रिभुवन के हम सबके भी ज्ञायक हो।
सिद्धि पाने वालों को प्रभु आप सहायक हो॥ 862॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. शनिचर मोह कर्म का मुझको सता रहा है नाथ।
संकटहर की शरण पड़ा हूँ देना मुझको साथ॥ 863॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. यमी दमी और संयमधारी शिवपद पाते हैं।
अल्पमति भी तव दर आकर सन्मति पाते हैं॥ 864॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. सेना चउ आराधन की चतुरंगी ले आए।
दुष्कर्मों पर विजय प्राप्त कर प्रभु शिवपुर जाएँ॥ 865॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'से' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. शरीर से निर्मोही होकर कठोर तप धारा।
स्वयं तिरे संसार-सिन्धु से औरों को तारा॥ 866॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. रीता उसका जीवन जिनने जिनभक्ति ना की।
पाने परमानन्द करूँ भक्ति मैं दिन-राती॥ 867॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'री' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. रंक प्रभु श्रद्धा करके राजा बन जाता है।
पतित जीव जिनदर्शन से पावन हो जाता है॥ 868॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. एक माह ही पूर्व मोक्ष के योग धरा प्रभु ने।
समवसरण तज श्री सम्मेदशिखर आए वन में॥ 869॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ए' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. तत्पर रहता भक्त सदा जिनपूजन करने को।
यही सेतु है भवसागर से पार उतरने को॥ 870॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. स्वभाव में रम गए प्रभु जी विभाव को तजकर।
वीतराग के द्वारे आए हम कुदेव तजकर॥ 871॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. रूपान्तरण हुआ उनका जो प्रभु-पद में आए।
छोड़ विकारी भाव स्वयं में निजानन्द पाए॥ 872॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. परम पदार्थ मोक्ष को पाकर पहुँचे चिन्मय देश।
अव्याबाध सुखी हो भगवन् दुःख नहीं लवलेश॥ 873॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. महक उठी चउ ओर सुगन्धी गन्धकुटी में नाथ।
ज्ञानकुटी तक जाने में प्रभु देना मुझको साथ॥ 874॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. थकान मिट जाती है सारी प्रभु दर्शन करके।
भविजन पुण्य बन्ध कर लेते प्रभु पूजन करके॥ 875॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. मध्यलोक से नाथ आपका सुमरन करता हूँ।
होवे सम्यक् मरण अन्त में यही चाहता हूँ॥ 876॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मध्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. यह-वह करते-करते मैंने काल बहुत खोया।
कभी न अन्तर में समकित का शुद्ध बीज बोया॥ 877॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. विषाद विस्मय आदि अठारह दोष मुक्त स्वामी।
किया सतत पुरुषार्थ मोक्ष का पारस जगनामी॥ 878॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. वर्ष शतक की आयु पाकर पंचम गति पायी।
नाथ आपका जीवन सारा अनुपम अतिशायी॥ 879॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. तिल में जैसे तेल भरा है तन में आतम राम।
कब विदेह पद पाऊँगा मैं कहो पार्श्व भगवान॥ 880॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. नो-इन्द्रिय यानि मन के वश होकर दुखी हुआ।
जिनने मन वश किया उन्हीं का आतम सुखी हुआ॥ 881॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. हितकारी प्रभु की वाणी सारे संशय हरती।
दिव्यध्वनि साक्षात् सुनूँ यह है प्रभु जी अरजी॥ 882॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. यशोधरा वह धरा जहाँ पर प्रभु ने तप धारा।
पवित्र भावों से सुर ने आ बोला जयकारा॥ 883॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. द्विधा नमूँ मैं द्रव्य भाव से पार्श्वप्रभु जी को।
गुरु कहते समताधारी प्रभु से कुछ तो सीखो॥ 884॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. ग्रहण लगा मम ज्ञान-सूर्य पर प्रभु रक्षा करिए।
मेरे तो प्रभु एक आप ही भव बाधा हरिए॥ 885॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. अहंकार ही आत्म पतन का बहुत बड़ा संदेश।
विनम्र वृत्ति से पाते हैं अविचल सौख्य चिदेश॥ 886॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. प्रतिमाएँ अधिकांश जिनालय में पारस जिन की।
सर्व प्रियङ्कर की भावों से मैंने भक्ति की॥ 887॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. शव समान उसका जीवन जो निज को ना जाने।
अपनों को जाने किन्तु निज को ना पहचाने॥ 888॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. मद में फूला-फूला रहकर क्यों निज को भूला।
राग-द्वेष कर चउ गतियों में झूल रहा झूला॥ 889॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. व्यन्तर भी तव पद में आकर मन को थिर करते।
दुर्जन भी तव शरणा पाकर पुण्यार्जन करते॥ 890॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. तिमिरहरण कर्त्ता पारस प्रभु कोटि-कोटि वन्दन।
परम दयालु मिटा रहे हैं भव्यों का क्रन्दन॥ 891॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. मदन पराजित हुआ आपकी दिव्य कान्ति लखकर।
जिसने सारा जग जीता वह भाग गया डर कर॥ 892॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. हाथ जोड़कर वन्दन करना अच्छा लगता है।
नाथ आपकी भक्ति करने में मन रमता है॥ 893॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. अनुकंपा की नाथ आपने अनन्त जीवों पर।
मैं भी सच्चा भक्त आपका करिए एक नज़र॥ 894॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. भारत की इस वसुन्धरा पर प्रभु ने जन्म लिया।
अनगिन भूले भटके जीवों को शिवमार्ग दिया॥ 895॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. देवाः चउ निकायी प्रभु के आगे नृत्य करें।
भाव शुद्ध करके अपने जीवन को धन्य करें॥ 896॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वाः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

## पूर्णार्घ्य

रहें जिस जगह सन्त उसे कभी नाश नहीं करते।
किन्तु भक्त के तन में रह प्रभु देह रहित करते॥
विदेह पद दाता प्रभुवर को वन्दन करता हूँ।
पार्श्वप्रभु के द्वय पद में पूर्णार्घ्य चढ़ाता हूँ॥16॥

ॐ ह्रीं श्रीं देहदेहिकलहनिवारकाय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।